Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

अलंकार

LIVE 03:00 PM

उपसर्ग-

उपसर्ग शब्दों के पहले जोड़े जाते हैं। इनसे शब्दों के अर्थ में प्राय: विशेष परिवर्तन जाता है।

परिभाषा

जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर अर्थ को बदल देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

भेद

उपसर्ग 3 प्रकार के होते हैं। वे नीचे दिये गये हैं :

1. तत्सम उपसर्ग
2. तद्भव उपसर्ग
3. विदेशज उपसर्ग |

(1)तत्सम उपसर्ग

हिन्दी में प्रयोग किये गये लगभग समस्त उपसर्गों का उद्गम संस्कृत से हुआ है। संस्कृत में 22 उपसर्गों की व्यवस्था है।

(2)तद्भव उपसर्ग (हिन्दी उपसर्ग)

हिन्दी में कुछ ऐसे उपसर्ग भी प्रयुक्त हो रहे हैं, जो संस्कृत में नहीं मिलते। ये हिन्दी की अपनी प्रवृत्ति के अनुसार विकसित उपसर्ग हैं, जो प्राय: तद्भव या देशज शब्दों से पूर्व जुड़ते हैं। डॉ. भोलानाथ के तिवारी ने इन्हें तद्भव उपसर्ग कहा है और इन्हें संस्कृत उपसर्गों से विकसित हुआ बताया है।

(3)विदेशज उपसर्ग

हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग 2 माध्यमों से आये हैं-(i) इस्लामिक प्रभाव के द्वारा (अरबी-फारसी द्वारा) (ii) अँगरेज़ी-प्रभाव के द्वारा (अँगरेज़ी भाषा-द्वारा) । तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (अर्थ और शब्द-रूप)

(1)तत्सम उपसर्ग-

अति -अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक,
अत्याचार, अत्युक्ति, अतिवृष्टि
अधि - अधिकरण अधिकार
अनु - अनुक्रम अनुचर
अप -अपकीर्ति अपभ्रंश
अभि -अभिमुख अभिलाष
अव -अवगत अवनति
आ -आकार आचरण
उत् -उत्कर्ष उत्तम उप उपकार उपहार
दुर -दुराचार दुर्गम

नि -निछेप निपात
निर -निराकार निर्दोष
निस -निस्संदेह निष्काषन
परा -पराजय पराक्रम
परि -परिवार परिहार
प्र प्रकाश प्रहार
प्रति-प्रतिकार प्रतिवादी
वि -विदेश विकास
सं -संकल्प संग्रह
सु -सुकर्म
स -सहित सरस
कु -कुकर्म कुरूप

तद्भव उपसर्ग-

अ, अन् - अचेत, अजान, अथाह, अबेर, अनमोल,
अध - अधकच्चा, अधपई, अधपका, अधसेरा, अधमरा, अधखिला
उन- उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
औ- औगुन। औसर
दुः -दुर्बल
नि -निखरा निडर
बिन -बिनदेखा बिनजाने
भर -भरपेट भरपूर

1. 'सम्' उपसर्ग से बना है?
(a) संयोग (c) स्वयंसेवक
(b) (b) सुकर्म (d) संतान

2.'अल' किस भाषा का उपसर्ग है?
(a) हिंदी. (c) फारसी
(b) उर्दू (d) अरबी

3. 'नादान' में ना उपसर्ग किस भाषा से आया है?
(a) हिंदी (b) उर्दू
(c) फारसी (d) संस्कृत

4. 'बदबू' में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है?
(a) ब (b) बद
(c) बे (d) बा

5. 'उनचास' में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) उ (b) उत
(c) उन (d) इनमें से कोई नहीं

6.निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं लगा है?
(a) अधिशासी (b) प्रशंसा
(c) विनाश (d) प्रत्याशा

7. 'क्रय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगाने से उसका अर्थ विपरीत हो जाएगा?

(a) 'अन्' (b) 'आ'
(c) 'प्र (d) 'वि '

8.'उज्ज्वल' में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) उज् (b) उ
(c) उप (d) उत्

9.'परिमाप' में उपसर्ग बताइए:

(a) परि (b) प

(c) प्र (d) परा

10. 'प्रख्यात' में उपसर्ग छाँटिए:

(a) पर (b) प्र

(c) परि (d) परा

(3)विदेशज उपसर्ग

हिन्दी में विदेशी भाषाओं के उपसर्ग 2 माध्यमों से आये हैं-(i) इस्लामिक प्रभाव के द्वारा (अरबी-फारसी द्वारा) (ii) अँगरेज़ी-प्रभाव के द्वारा (अँगरेज़ी भाषा-द्वारा) । तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (अर्थ और शब्द-रूप)

अल -अलबेला अलबत्ता
कम -कमजोर
खुश खुशहाल
सर -सरपंच
दर -दरमियान दरकार

प्रत्यय-

- ये शब्दों अथवा धातुओं के अन्त में लगाये जाते हैं।
- इनके प्रयोग से शब्द-भेद और उनके अर्थ में भी अन्तर हो जाता है।
- इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप में नहीं होता।
- प्रत्यय का निर्माण दो शब्दों से हुआ है,
- प्रति + अय।

- 'प्रति' का अर्थ 'साथ में 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है।

- इस प्रकार प्रत्यय का अर्थ हुआ-शब्दों के साथ,पर बाद में लगनेवाला ।

उदाहरण के लिए-

त्व = मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
बन्धु + त्व = बन्धुत्व
ता= नि + जता = निजता
शिशुता,मानवता,अखंडता

प्रत्यय 2 प्रकार के होते हैं-

1. कृदन्त प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1.कृदन्त प्रत्यय-

कृत् प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होते हैं और उनके योग से बने शब्द 'कृदन्त' कहलाते हैं। उन्हें 'धातुज नाम' अथवा 'क्रियावाचक शब्द' भी कहते हैं।

बनावट, ढकना, चलनसार, भुलक्कड़
त्यागी, बचत आदि ऐसे ही शब्द हैं।

कृदन्त प्रत्यय- भेद (6)

कृत्प्रत्यान्त शब्द कई प्रकार के होते हैं। उनमें मुख्य छ: हैं-

(i)भाववाचक
(ii) कर्तृवाचक
(iii) कर्मवाचक
(iv) करणवाचक
(v) कृदन्तीय संज्ञाएँ
(vi) कर्तृवाचक और क्रियाद्योतक कृदन्तीय विशेषण

(1) भाववाचक

आ, आई, आन, आप, आव, आस, ई, औसी, त, ती, न्ती, न, नी, र, वट, हट आदि प्रत्ययों के जोड़ने से भाववाचक कृदन्तीय संज्ञाएँ बनती हैं।

उदाहरण के लिए-

आ- घेरा, छापा, गुज़ारा
आई- गढ़ाई, चराई, पढ़ाई, रुलाई, लिखाई, लड़ाई
आन- उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान,
आप- मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप,
आव- उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव

(2)कर्तृवाचक-

अंकू- उड़ंकू, अड़ंकू, पढ़ाकू
अक-लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्पादक, साधक,

अक्कड़-पियक्कड़, बुझक्कड़, भुलक्कड़, कुदक्कड़
आ-चढ़ा, रखा, कटा, भूँजा, फोड़ा, चला

आक-पैराक, तैराक, तड़ाक, उड़ाक
आकू-लड़ाकू, उड़ाकू, पढ़ाकू, कूदाकू, हलाकू

इयल-अड़ियल, सड़ियल, मरियल, बढ़ियल, दढ़ियल
इया-जड़िया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया

(3)कर्मवाचक -

ना-खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना,
लेना, नी-चटनी, सुँघनी, कहनी, छननी, ओढ़नी,
घोटनी, पढ़नी,

(4)करणवाचक-

आ-झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई-रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ-झाड़ू, माड़ू, काढ़ू, साढ़ू न-झाड़ने, बेलेन, जामन
ना-बेलना, कसना, ओढ़ना, घोटना, रेतना, दलना

(5)विशेषणवाचक-

आवना - सुहावना, लुभावना, डरावना, हँसावना, रुलावना, उठावना, गिरावना

ना-उड़ना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना

नी-कहनी, सुननी, हँसनी, ओढ़नी, पहननी, जननी

वाँ-ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ

(6)स्थानवाचक-

क-बैठक, फाटक

अधिकरणवाचक

ना-झिरना, रमना, पालना

2.तद्धित प्रत्यय

धातुओं को छोड़ शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं, उन्हें 'तद्धित' कहते हैं और जो प्रत्यय उन शब्दों में लगाये जाते हैं, वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए,

लूटना = लूट
जाँचना = जाँच
समझना = समझ
चमकना = चमक
मारना = मार
पहुँचना = पहुँच

(2)भाववाचक -
आ-जोड़ा, चूरा, सराफ़ा, बजाजा, बोझा
आइँद-कपड़ाइँद, सड़ाइँद, घिनाइँद, मघाइँद
आई-भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन- घमासान, ऊँचान, निचान, लम्बान, चौड़ान, उड़ान, बैठान
आयत-बहुतायत, पञ्चायत, तिहायत, अपनायत
आवट अमावट, महावट, गिरावट

(3) कर्तृवाचक-
इया-आढ़तिया, मखनिया, बखेड़िया, मुखिया, रसोइया
एड़ी-भँगोड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी
एली-हथेली, भेली, तबेली

(3)गुणवाचक-
आऊ-अगाऊ, धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल-खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला- अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाड़ला
(
4)करणवाचक-
आ-झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा

(5)ऊनवाचक-

इया-खटिया, फुड़िया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई-पहाड़ी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की-कनकी, टिमकी टा- रोंगटा, कलूटा
टी-चोटी, बहूटी
ड़ा-चमड़ा, बछड़ा, दु:खड़ा, मुखड़ा, टुकड़ा, लँगड़ा

(6)स्थानवाचक-

आना-राजापुताना, हिन्दुआना, तिलंगाना, उड़ियाना
इया-मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया
ड़ी-अगाड़ी, पिछाड़ी

विशेष/ अपवाद प्रत्यय:-

यदि किसी शब्द में अ ,इ ,य ,इक ,एय ,अयन , आयन आदि प्रत्यय जोड़कर संधि कार्य हो तो शब्द के प्रथम स्वर में निम्नानुसार परिवर्तन होता है –

क) प्रथम स्वर 'अ' होने पर 'आ' में बदल जाता है | जैसे –

मनु + अ = मानव

गंगा + एय = गांगेय

समाज + इक = सामाजिक

वत्स्य + आयन = वात्स्यायन

ख) प्रथम स्वर ई / ए होने पर 'ऐ' में बदल जाता है | जैसे –

इतिहास + इक = ऐतिहासिक

एक + य = ऐक्य

नीति + इक = नैतिक

वेद + इक = वैदिक

(ग) प्रथम स्वर उ / ऊ / ओ होने पर 'औ' में बदल जाता है | जैसे –

उद्योग + इक = औद्योगिक

सुंदर + इक = सौन्दर्य

भूत + इक = भौतिक

योग + इक = यौगिक

घ) प्रथम स्वर 'ऋ' होने पर 'आर्' में बदल जाता है | जैसे –

पृथक + इक = पार्थक्य

1.यदि किसी शब्द के अंत में ‘य’ लिखा हुआ हो तथा ‘य’ से ठीक पहले कोई आधा वर्ण हो , वहाँ ‘य’ प्रत्यय मानना चाहिए | जैसे –

कवि + य = काव्य
स्वस्थ + य = स्वास्थ्य
पृथक + य = पार्थक्य
लवण + य = लावण्य

2.यदि शब्द के अंत में ‘य’ लिखा हो लेकिन ‘य’ से ठीक पहले आधा वर्ण नहीं हो तो वहाँ ‘य’ से ठीक पूर्व वाले स्वर के अनुसार प्रत्यय मानना चाहिए | जैसे –

भारत + ईय = भारतीय
अग्नि + एय आग्नेय

3.यदि कोई शब्द किसी से उत्पन्न होने का भाव प्रकट करता है या संतानसूचक / वंशसूचक होता है तो वहाँ ‘अ’ प्रत्यय मानना चाहिए | ऐसे शब्दों के अंत में ‘व’ लिखा रहता है | जैसे –

मनु + अ =मानव
कुरु + अ = कौरव
विष्णु + अ = वैष्णव
लघु + अ = लाघव

1. लठैत में प्रत्यय बताइए:

(a)त

(b)एत

(c)ऐत

(d)लाठी

2. गुलाबी में कौन-सा प्रत्यय है?

(a)बी

(b)ई

(c)लावी

(d) गुल

3. लिखावट में प्रत्यय छाँटिए:

(a) वट

(b)ट

(c)आवट

(d)खावट

4. सैनिक शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

(a) क

(b) इक

(c) ईक

(d) निक

5.धूमिल में प्रत्यय बताइए

(a) ल

(b) लु

(c) इल

(d) मिल.

अलंकार-

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है-सजावट,श्रृंगार, आभूषण।

काव्यशास्त्र में अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य सौन्दर्य के लिए होता है, अर्थात् काव्य रूपी काया की शोभा बढ़ाने वाले अवयव को अलंकार कहते हैं।

जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार काव्य में प्रयुक्त होने वाले अलंकार शब्दों एवं अर्थों की सुन्दरता में वृद्धि करके चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

अलंकार के भेद–अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं

1.शब्दालंकार– जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

2.अर्थालंकार- जहाँ पर अर्थ कारण काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है अर्थात् चमत्कार आ जाता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अपवाद - जहाँ शब्द और अर्थ दोनों में ही विशेषता आ जाने से सौन्दर्य या चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ **'उभयालंकार'** होता है।

1.शब्दालंकार–

जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

- शब्दालंकार के भेद हैं -

(i) अनुप्रास अलंकार
(ii) यमक अलंकार
(iii) श्लेष अलंकार

(1)अनुप्रास अलंकार-

जहाँ पर एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, चाहे उनके स्वर मिले या न मिलें, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:कान कानन कुंडल मोरपखा पै बनमान विराजति है

यहाँ पर कान, कानन, कुंडल में 'क' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हुई है। अत: अनुप्रास अलंकार है।

सामान्यतः अनुप्रास अलंकार के 5 माने हैं गए

(1) छेकानुप्रास
(2) वृत्यानुप्रास
(3) श्रुत्यानुप्रास
(4) लाटानुप्रास
(5) अन्त्यानुप्रास

(1) छेकानुप्रास–

जहाँ एक व्यंजन वर्ण अथवा अनेक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है।

उदाहरण –

- विविध सरोज सरोवर फूले। (स)
- घोर घाम हिम बाहर सुखारी (घ)
- वर दंत की पंगति कुंद कली('क')

- अमिय भूरिमय चूरन चारु।

समन सकल भवरुज परिवार॥ ('च' तथा 'स')

- रसवती रसना करके कही। (र ,क)
- कथित थी कथनीय गुणावली। (क, थ)

(2)वृत्त्यनुप्रास – जहाँ एक अथवा अनेक व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो।

उदाहरण –

- तरणि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
- प्रतिभट कटक कँटीले केते काटि-काटि,
- कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।
- सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी ।
- मुदित महीपति मन्दिर आये।
- सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।।

(3) श्रुत्यानुप्रास- जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण:

- तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई ।

इसमें दन्त्य वर्णों त, ल, स, न, र की आवृत्ति हुई है। इसलिए श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

(4) लाटानुप्रास :

जहाँ एक शब्द अथवा वाक्यखण्ड की उसी अर्थ में आवृत्ति हो किन्तु तात्पर्य अथवा अन्वय में भेद हो।

पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥

मात्र सपूत और कपूत शब्द की भिन्नता के आधार पर पूर्ण वाक्य अथवा वाक्य-खण्ड एक होते हुए भी भिन्नार्थक का द्योतक हो गया है।

सुपुत्र के लिए धन-सञ्चय की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता है।

दूसरी ओर, कुपुत्र के लिए धन सञ्चय का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि अपने अविवेक से वह उस धन को अविलम्ब ही समाप्त कर देगा।

(5)अन्त्यानुप्रास-

जहाँ चरण या पद के अन्त में स्वर या व्यंजन की समानता होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण-

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

यहाँ दोनों पंक्तियों के अन्त में 'जन' व्यंजन की समानता है अतः अन्त्यानुप्रास है।

धन्यवाद...